राजदेव सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667

निदेशक की कलम से.......................

हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की इस वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा हिंदी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजनों के साथ–साथ विगत 20–21 वर्षों से प्रकाशित की जा रही अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** के 22वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। गृह पत्रिका **"प्रवाहिनी"** में वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक तथा कविताओं का समावेश संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति गहन रूचि को प्रकट करता है। अधिकारियों व कर्मचारियों की हिंदी लेखन रूचि में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है और वे अपने सामान्य प्रकृति के कार्यों के साथ–साथ तकनीकी कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में यह एक सराहनीय प्रयास है।

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग, प्रचार–प्रसार तथा विकास में अभिवृद्धि सुनिश्चित करने की दृष्टि से संस्थान में हिंदी कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, हिंदी दिवस, पखवाड़ा, मास आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसी क्रम में हर वर्ष **"प्रवाहिनी"** पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है। प्रवाहिनी का निरन्तर प्रकाशन इस बात का द्योतक है कि संस्थान के पदाधिकारियों का हिंदी के प्रति गहरा लगाव है।

देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, अतः भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में राजभाषा विभाग द्वारा जो भी आदेश जारी किए जाते हैं उनका समुचित अनुपालन सुनिश्चित करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। इस पत्रिका के माध्यम से मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहता हूं कि वे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर योगदान दें और इस अभियान को सफल बनाने में भरपूर सहयोग दें।

संस्थान का यह प्रयास रहा है कि **"प्रवाहिनी"** पत्रिका में संकलित किए जाने वाले लेखों को भाषा और साहित्य संबंधी विषयों तक ही सीमित न रखा जाए बल्कि इसमें तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधाओं से संबंधित विद्वानों के आधुनिक ज्ञान संबंधी लेखों को भी शामिल किया जाए। अतः **"प्रवाहिनी"** के प्रस्तुत अंक में भिन्न–भिन्न विषयों के लेखों को स्थान दिया गया है।

"प्रवाहिनी" के इस अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके परिवारजनों के अलावा संस्थानेत्तर व्यक्तियों के ज्ञानवर्धक, रोचक एवं महत्वपूर्ण लेखों को शामिल किया गया है। भाषा सरल तथा सहज रखने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह अंक समस्त सुधी पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप रोचक तथा उपयोगी सिद्ध होगा।

"प्रवाहिनी" के प्रस्तुत अंक के संपादन, टंकण, प्रूफ रीडिंग एवं प्रकाशन कार्यों से जुड़े सभी पदाधिकारी तथा विद्वत लेखक धन्यवाद के पात्र हैं। मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए इस पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)